ॐ

पाप-दूध से गो-हत्या

पुण्य-दूध से गो-रक्षा

प्रकाशक : **गोसेवा परिवार**
524B, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता - 700003
E-mail : gosevaparivar@gmail.com
website : gosevaparivar.org
8100330044

लेखक : श्री ललित आनन्द
+91-9331027471

प्रुफ चेकिंग : श्रीमति आशा तुलस्यान
(M.A. (Hindi), B.Ed., M.Phil)

प्रथम संस्करण : बुद्ध पूर्णिमा, बैशाख पूर्णिमा
युगाब्ध 5119, सम्वत् 2074

मुद्रक : नीरज झुनझुनवाला
१०, पी. जी. लेन, कोलकाता

गोसेवा निधि : ₹ 25/-
(पुस्तक के विक्रय से प्राप्त धनराशी का उपयोग
गोसेवा के कार्यो मे ही किया जायेगा।)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्र:

- पुण्य-दूध और पाप-दूध १
- आवश्यक प्रजनन एवं अनावश्यक प्रजनन ३
- गोवंश में परिवार नियोजन ४
- गोसंवर्धन एवं गोसंरक्षण ९
- गो हत्या का कारण ११
- क्यों है पाप-दूध हानिकारक १७
- पाप-दूध उद्योग और गोमांस उद्योग एक दूसरे के परिपूरक हैं १९
- पुण्य दूध का उपाय २२
- गोरक्षा के कार्यों में भ्रम २५
- गोवंश की रक्षा क्यों करें? २९
- गोरक्षा का उपाय ३४
- जन जागरण ४१
- कहते हैं माँ है ये (कविता) ४६

पुण्य-दूध और पाप-दूध

पुण्य-दूध और पाप-दूध का तात्पर्य भारतीय गाय का दूध एवं अन्य पशुओं के दूध में भेद से नहीं है और ना ही शुद्ध-दूध और मिलावटी दूध के भेद से है।

१. जिस कार्य से दूसरों का हित होता हो उसे पुण्य कहते हैं।
२. जिस कार्य से दूसरों को पीड़ा पहुँचती हो उसे पाप कहते हैं।

१. पुण्य-दूध (अहिंसक दूध) की परिभाषा :

जिस दूध के उत्पादन में

१. दूध देने वाली गाय के बच्चे को उसके हिस्से का पर्याप्त दूध पिलाया जाता है,
२. उस गाय को धूप में हरा घास चरने के लिए ले जाया जाता है,
३. उससे उत्पन्न हर संतान को सुख पूर्वक पाला जाता है,
४. दूध उत्पादन के लिए किसी भी पीड़ा-दायक या नुकसान दायक उपायों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

ऐसा दूध पुण्य-दूध (अहिंसक दूध) कहलाता है।

यह दूध मनुष्य और गोवंश दोनों के लिए कल्याणकारी है।

२. पाप-दूध (हिंसक दूध) की परिभाषा :

जिस दूध के उत्पादन में

१. दूध देने वाली गाय के बच्चे को पर्याप्त दूध नहीं पिलाया जाता या मार दिया जाता है,

२. उस गाय को चराने नहीं ले जाया जाता तथा एक ही खूंटे से दिन भर बांधे रखा जाता है,

३. उससे उत्पन्न संतानो को किसी न किसी समय कसाईखाने भेज दिया जाता है या उनकी उचित देखभाल नहीं की जाती,

४. दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए कृत्रिम, पीड़ा-दायक या नुकसान-दायक उपायों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार से प्राप्त दूध पाप-दूध (हिंसक दूध) कहलाता है। पाप-दूध मनुष्य और गोवंश दोनों के लिए भयंकर घातक है।

पुण्य-दूध ही दूध है, पाप-दूध तो सिर्फ पाप है, दूध नहीं। यह सिद्धांत सिर्फ गाय के दूध पर ही लागू नहीं होता, बल्कि अन्य सभी दुधारु पशुओं (जिनसे दूध निकाला जाता है) पर भी लागू होता है। ●●●

आवश्यक प्रजनन एवं अनावश्यक प्रजनन

आवश्यक प्रजनन - जब गाय का प्रजनन उसकी संतति को बढ़ाने के लिए किया जाता है तो उसे आवश्यक प्रजनन कहते हैं। इसमें बछड़ा और बछड़ी में कोई भेद नहीं किया जाता। संतति की संख्या बढ़ाने के पीछे मुख्य उद्देश्य होता है, गोबर-गोमूत्र की उपलब्धता। आवश्यक प्रजनन से गोसंवर्धन और गोसंरक्षण दोनों होता है। ऐसी परिस्थिति में मिलने वाला दूध, पुण्य-दूध होता है।

अनावश्यक प्रजनन - जब गाय का प्रजनन उसकी संतति को बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि दूध प्राप्ति के लिए किया जाता है तो उसे अनावश्यक प्रजनन कहते हैं। बछड़ा और बछड़ी में भेद किया जाता। बछड़ी को दूध उत्पादन के लिए रखते हैं लेकिन बछड़ा को कसाई के हाथों बेच देते हैं। संतति की संख्या को बढ़ाने का कोई उद्देश्य नहीं रहता। अनावश्यक प्रजनन से गोसंवर्धन तो होता ही नहीं अपितु इससे गोहत्या को बढ़ावा मिलता है। ऐसी परिस्थिति में मिलने वाला दूध, पाप दूध होता है। ●●●

गोवंश में परिवार नियोजन

यदि हर मादा गोवंश (गाय) से हर वर्ष प्रजनन करवाया जाये तो एक गाय और उसकी संतानों से १० वर्ष में ५० गोवंश पैदा होगा और यही क्रम २० वर्षों तक चलाया जाये तो २८०० से अधिक गोवंश हो जायेगा। इस प्रकार अबाध प्रजनन होता रहा तो असंख्य गोवंश हो सकता है। हमारी पालने की क्षमता से अधिक संख्या में गोवंश पैदा होने से उनका पालन करना असंभव हो सकता है। ऐसे में गोवंश की दुर्दशा हो सकती है। कुछ लोगों को यह भ्रम है कि हर वर्ष गाय से प्रजनन नहीं करवाया तो पाप लगेगा। लेकिन वही लोग जब उसके बछड़े को कसाई के हाथों बेच देते हैं तो पाप की बात भूल जाते हैं। मनुष्य स्वयं परिवार नियोजन क्यों करता है? बच्चे तो भगवान का रुप होते हैं, तो क्या परिवार नियोजन नहीं करना चाहिए? जिस प्रकार मनुष्यों में परिवार नियोजन करना उचित है, उसी प्रकार गोवंश में भी परिवार नियोजन या प्रजनन पर नियंत्रण करना उचित है, धर्म संगत है। इसमें किसी प्रकार का निषेध नहीं है। गोवंश का परिवार नियोजन करना किसी भी दृष्टि से अनुचित नहीं है। गोवंश का परिवार नियोजन

(यानि प्रजनन पर नियंत्रण) होगा तो ही गोवंश सुरक्षित रहेगा, दर्दनाक हत्या से बचेगा अन्यथा गो-हत्या का कलंक भारत से कभी नहीं मिटेगा, कोई मिटा नहीं सकता। क्योंकि जब नैतिक मार्ग से संख्या में नियंत्रण नहीं लाया जाता है तब अनैतिक मार्ग अपनाये जाते हैं। उदाहरण से समझें- चीन देश में एक संतान का कानून बना। उसके बाद वहाँ की जनता ने उस कानून का पालन किया लेकिन संयम नहीं किया, सावधानी नहीं बरती। इसके कारण अनावश्यक गर्भ हुए। चूँकि उनको संतान नहीं चाहिए थी, उन्होंने गर्भपात (भ्रूणहत्या) जैसे जघन्य पाप का रास्ता अपनाया। चीन में करोंड़ो की संख्या में गर्भपात हुए और आज भी होते हैं। बात यहीं समाप्त नहीं होती। लोग इतने नीच हो गए कि गर्भपात से निकलने वाला मांस पिण्ड (भ्रूण) को मनुष्य का आहार बना दिया। उसे पका कर खाने लगे। उसे डब्बों में पैक कर बेचने लगे। यह हकीकत है। जिस प्रकार गर्भपात एक महापाप है और उससे बचने के लिए उचित है कि गर्भवती होने से पहले ही सावधानी बरती जाये और संयम रखा जाये उसी प्रकार गोहत्या एक महापाप है और उससे बचने के लिए गोवंश के प्रजनन पर भी नियंत्रण होना चाहिये।

जब अबाध प्रजनन से मनुष्य नहीं बच पाया तो गोवंश कहाँ से बचेगा। गोवंश की संख्या को नियंत्रित करने का उद्देश्य है कि जिससे उसको अनैतिक मार्ग से समाप्त न किया जाये। इसका मतलब यह कभी नहीं है कि गो-जाती को ही नष्ट कर दिया जायेगा। जब तक गोबर-गोमूत्र के लिए गोवंश की संख्या-वृद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती, तब तक सिर्फ दूध के लिए प्रजनन कराने पर रोक लगाना चाहिए। तब तक जितने गोवंश की स्वाभाविक मृत्यु होती है उतने ही नए प्रजनन होने चाहिए। इससे वर्त्तमान संख्या स्थिर रहेगी, घटेगी भी नहीं, और बढ़ेगी भी नहीं।

प्रजनन का एक मात्र उद्देश्य गोसंवर्धन होना चाहिए ना कि दूध। गो-संवर्धन के लिए किया जाने वाला प्रजनन से जो दूध प्राप्त होता है उसको अतिरिक्त लाभ या प्रसाद के रुप में ग्रहण किया जाना चाहिए। इस प्रकार का दूध मिले तो अवश्य सेवन करना चाहिए। यह अमृत है और इसकी कोई कीमत नहीं हो सकती।

जब तक संतति की आवश्यकता है तब तक ही गो-प्रजनन होना चाहिए उसके बाद उसको नियंत्रित करना चाहिए। अबाध प्रजनन सर्वथा अनुचित है।

जब तक भारत में उपलब्ध गोवंश का १०० प्रतिशत गोमूत्र-गोबर का उपयोग नहीं होता तब तक अनावश्यक प्रजनन नहीं होना चाहिए। जिस दिन १०० प्रतिशत गोमूत्र-गोबर का उपयोग होने लग जाये उस दिन तक रोके रखें। जिस दिन उससे अधिक गोमूत्र और गोबर की मांग हो, उस दिन से प्रजनन शुरु करना चाहिए। ऐसी स्थिति में गोवंश सर्वथा सुरक्षित और सुखी रहेगा। वह गोवंश किसी की दया का मोहताज नहीं होगा। आज गोमूत्र-गोबर की उपयोगिता घट गई और दूध का महत्व बढ़ गया है। इसी से गोवंश पर अत्याचार बढ़ गया है।

गोमूत्र-गोबर की उपयोगिता को समझना होगा। गोमूत्र-गोबर मनुष्य जाति के लिए गोवंश का वरदान है। कम शब्दों में कहें तो गोमूत्र-गोबर भूमि का आहार है, कृषि के लिए आवश्यक है, ऊर्जा का स्रोत है, रोगों की दवा है और सुख समृद्धि का आधार है। जिसने गोमूत्र-गोबर की महिमा को नहीं जाना उसने गोवंश की महिमा को नहीं जाना। सिर्फ दूध से गोमाता की महिमा को पहचानना अधूरा ज्ञान है।

यदि प्रत्येक गाय से उसके बच्चे देने की क्षमता के

बराबर प्रजनन करवाते रहे तो सारे संसार की सम्पदा लगाकर भी गोवंश को बचाया नहीं जा सकता। चाहे उसके गोमूत्र-गोबर का उपयोग हो या न हो। यदि आप हर गाय को सिर्फ दूध की दृष्टि से देखते हैं तो यह गिद्ध दृष्टि है। इसका अंतिम परिणाम गोहत्या ही होने वाला है।

●●●

गोसंवर्धन और गोसंरक्षण

गोसंवर्धन करने का अर्थ है गोवंश की संख्या में वृद्धि करना और गोसंरक्षण करने का अर्थ है वर्तमान में उपलब्ध गोवंश को सुरक्षित रखना। गोसंवर्धन और गोसंरक्षण दो अलग-अलग विषय है। गोसंवर्धन तब जरुरी होता है जब आपके पास गोवंश का अभाव हो और उसकी संख्या बढ़ाने की आवश्यकता हो और साथ ही उसके संरक्षण की व्यवस्था हो। लेकिन यदि आपके पास जो गोवंश उपलब्ध है, उसी का संरक्षण नहीं कर पा रहे हैं तो संरक्षण का काम पहले करना चाहिए और संवर्धन का काम बाद में करना चाहिए। जिस दिन हमें अहसास होगा कि गोबर गोमूत्र के लिए हमें और गोवंश की आवश्यकता है उस दिन हम संवर्धन का कार्यक्रम आगे बढ़ाएँ। उससे पहले जितना है उसे ही भलीभाँति पालन करें और उसके गोबर गोमूत्र का सदुपयोग करें। जिस दिन लोगों को लगे कि गोमूत्र और गोबर का अभाव हो रहा है उस दिन से प्रजनन की प्रक्रिया प्रारंभ होनी चाहिए। जिस प्रकार मटके में छेद हो तो उसमे जितना भी पानी डालो वह मटका कभी भरेगा नहीं। यही हाल अनावश्यक गो-प्रजनन का है। ऐसे प्रजनन

से संवर्धन नहीं होगा। यह बातें समष्टि को ध्यान में रखकर बताई गई है। इसमें कुछ अपवाद हो सकते हैं जैसे कोई व्यक्ति या संस्था किसी एक लुप्त होती नस्ल के सुधार और संवर्धन का काम कर रहा है तो अवश्य करना चाहिए। वह अनावश्यक प्रजनन नहीं है, आवश्यक प्रजनन है। हम तो सिर्फ अनावश्यक प्रजनन का विरोध कर रहे हैं।

पहले १०० प्रतिशत गोसंरक्षण हो, उसके बाद गोंसंवर्धन हो। यदि १०० प्रतिशत गोसंरक्षण नहीं हुआ तो गोसंवर्धन की बात निरर्थक है।

●●●

गोहत्या का कारण

ऊपर-ऊपर से देखने पर ऐसा लगता है कि गोमांस खाने वालों के कारण ही गो-हत्या हो रही है और इसके लिए केवल वे ही दोषी है।

लेकिन असली कारण बहुत चौंकाने वाला है। हमें यह जानकर आश्चर्य होगा कि जो गाय उसके दूध के लिए पूजी जाती है, वही दूध उसकी हत्या का प्रमुख कारण बन गया है। हम जानते हैं कि गाय का दूध अमृत है। उसका दूध हम सब ने पीया है और इस कारण हम उसे गोमाता कहते हैं। ऐसे में यह कल्पना करना भी कठिन है कि यही दूध गोमाता के प्राण हर रहा है।

कैसे? आइये इस बात को थोड़ा विस्तार से समझते हैं।

मान लेते हैं कि आपका दूध गाय से ही आता है। वह गाय दूध तभी देगी जब वो अपनी संतान को जन्म देगी। एक संतान को जन्म देने के बाद वो गाय जीवन भर दूध नहीं देगी, बल्कि ९ माह से १२ माह तक ही दूध देगी और

फिर उससे दूध लेना हो तो हर बार उससे प्रजनन करवाना होगा यानि संतान की उत्पत्ति करवानी होगी। यदि ऐसा होता कि गाय एक बार बच्चा देने के बाद जीवन भर दूध देती तो कोई समस्या नहीं होती, परन्तु ऐसा होता नहीं। यदि जीवन भर दूध लेना है तो उस गाय को १० से १५ बच्चों को जन्म देना होगा। बार-बार बच्चे को जन्म देना भी गाय के लिए एक पीड़ादायी प्रक्रिया है।

जो लोग दूध का व्यापार करते हैं उनके पास इतनी जगह नहीं होती कि वो गाय की हर संतान को अपने पास रखकर उसका पालन पोषण कर सके। इसके अलावा उसका आर्थिक पक्ष उसे गो-संतति के पालन पोषण की अनुमति नहीं देता है इसलिए अन्ततोगत्वा कसाई-खाने में उसकी हत्या होती है। यदि कोई चाहे कि वह प्रत्येक गोवंश का पालन करते हुए दूध उत्पादन करेगा तो वह संभव है लेकिन उसके लिए एक दुधारु गोवंश के पीछे २० से २५ गोवंश बिना दूध का पालन करना होगा। अर्थात सिर्फ ५ प्रतिशत गोवंश ही दुधारु होगा बाकी ९५ प्रतिशत गोवंश बिना दूध के लिए पालन करना होगा। यदि ऐसा होगा तो उस दूध के कारण गो-हत्या नहीं होगी, परन्तु दुग्ध उद्योग

में ऐसा कहीं होता नहीं।

अभी जो स्थिति है उसको समझने का प्रयास करें तो पता चलेगा कि दूध व्यापारी के पास जितनी जगह होती है उसमें अधिकतम जितनी गाय रख सकता है, वह उतनी ठूस-ठूस कर रखने का प्रयास करता है। वो गाय कभी बाहर नहीं निकलती। अधिकांश खटालों में धूप और हवा भी पर्याप्त नहीं मिलती। जितने दिन दूध देती है उतने दिन उस काल कोठरी में एक खूंटे से बंधी रहती है। हिलने-डूलने के लिए भी पर्याप्त जगह नहीं होती। चूँकि दूध के व्यापारी को अधिक मुनाफा चाहिए इसलिए वह उसकी संतान को पर्याप्त दूध नहीं पिलाता और इस कारण अधिकांशत: उसकी एक माह के अन्दर मौत हो जाती है या फिर दूध का व्यापारी उसे कुछ रुपये के लालच में कसाई को बेच देता है। संतान के मर जाने के कारण गाय स्वाभाविक रुप से दूध नहीं देती। इसलिए अप्राकृतिक उपाय से उसका दूध निकालने के लिए दूध का व्यापारी ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन का नियमित प्रयोग करता है, जो गाय के लिए भयंकर पीड़ा दायक होता है। ऐसी स्थिति में वो प्रतिदिन नारकीय पीड़ा से गुजरती है जो कि उसकी

हत्या के समान दर्दनाक होता है। इतना ही नहीं जब वह गाय दूध देना बंद कर देती है तो उसे कसाई के हाथों बेच दिया जाता है। जहाँ उसे तड़पा-तड़पा कर मारा जाता है। अन्यथा सड़क पर आवारा छोड़ दिया जाता है। सड़कों पर जो गोवंश आवारा घूमता है और इधर-उधर कचरा खाने को विवश होता है, वे सभी इसी पाप-दूध व्यवसाय का ही परिणाम है। कचरा खाते वक्त कई हानिकारक वस्तुएँ जैसे प्लास्टिक, ब्लेड इत्यादि उसके पेट में चली जाती है और उस गाय की कष्टदायक अकाल मृत्यु होती है।

ऐसा सिर्फ शहर के खटालों में ही होता है ऐसा नहीं, गाँव के किसानों के घर में भी पाप-दूध का उत्पादन होता है। गाँव में खटालों की तरह परिस्थिति नहीं होती लेकिन वहाँ भी किसान अतिरिक्त गोवंश को अपने हाथों से कसाई को बेच देता है।

गहराई से विचार करें तो गाय को होनी वाली इस भयंकर पीड़ा का मूल कारण इस प्रकार का दूध व्यवसाय ही है। क्या यह दूध हमारे लिए उपकारी है? यह दूध पीने वाले को लाभ तो बहुत दूर की बात है, कई प्रकार की हानि होती है। साथ ही ऐसा दूध पीने वाले को गो-हत्या का

जघन्य पाप लगता है। इसे दूध कहना ही गलत है, यह तो गाय का सफेद खून है जिसे हम जाने-अनजाने बड़े चाव से पी रहे हैं। इसी प्रक्रिया का परिणाम है कि कसाइयों को गोमांस की आपूर्ति के लिए नियमित गोवंश उपलब्ध होता रहता है और बड़ी संख्या में उपलब्ध होता है। कोलकाता में जितना दुधारु गोवंश इन खटालों में दूध व्यापारियों के पास आता है, वो आता तो दूध के नाम पर है, लेकिन अंत में कसाई के पास जाता है। ऐसा दूध खरीद कर हम कसाई के इस धंधे को सहयोग कर रहे हैं। खटाल वालों का गणित इस प्रकार का है कि वो दूध बेच कर जितना कमाता है उससे अधिक वह अंत में (दूध बंद होने के बाद) गाय को कसाई के हाथों बेच कर कमाता है। ऐसे व्यापारियों से दूध खरीदने का सीधा अर्थ है कि आपके पैसे से गो-हत्या का धंधा फल-फूल रहा है। पता करेंगे तो पता चलेगा कि कोलकाता के आस-पास से प्रतिदिन हजारों बछड़ें/बछड़ी की हत्या होती है। उनका दोष इतना ही है कि उन्होंने आपको दूध देने के लिए इस धरती पर जन्म लिया और उस गोमाता का दोष यह है कि आपको दूध मिले इसके लिए उसने उनको जन्म दिया।

भारत की स्वतंत्रता को ६९ वर्ष हो गए। पिछले ६९ वर्षों में लगभग ५० करोड़ से अधिक गोवंश ही हत्या की गई है। परन्तु स्वतंत्रता के समय इतना गोवंश नहीं था। उस समय लगभग २८ करोड़ गोवंश था और आज लगभग ७ करोड़ गोवंश है। गोवंश की संख्या में कुल ह्रास २१ करोड़ का हुआ परन्तु हत्या ५० करोड़ से अधिक की हुई। बाकी का २९ करोड़ गोवंश कहाँ से आया? वह आया दूध के लिए किए गए प्रजनन से। यदि अनावश्यक प्रजनन नहीं किया होता तो करोड़ों गोवंश को पीड़ा नहीं होती। इससे साफ पता चलता है कि यदि दूध के लिए अनावश्यक प्रजनन नहीं करवाया होता तो इतनी गो हत्याएँ नहीं होती।

●●●

क्यों है पाप-दूध हानिकारक

पाप-दूध गोहत्या का मुख्य कारण है। ऐसा दूध पीने वाले को गो-हत्या का जघन्य पाप लगता है। पाप-दूध का सेवन और मांसाहार एक ही श्रेणी में आते हैं। दोनों में हिंसा है। बाजार में उपलब्ध लगभग १०० प्रतिशत दूध पाप-दूध है।

पाप-दूध आपके लिए हानिकारक क्यों है इसको भी विस्तार से समझने की आवश्यकता है। पाप-दूध में गाय को एक काल-कोठरी जैसी जगह में बांध कर रखते हैं और कभी भी धूप में चराया नहीं जाता। इसके कारण उसके दूध में जो स्वर्ण क्षार होना चाहिए वह नहीं होता। यानि गाय धूप में घूमेगी तभी स्वर्ण-क्षार बनेगा। कारण धूप में उसकी सूर्य-केतु नाड़ी सक्रिय होती है और गाय अपने सींगों से धूप की किरणों को ग्रहण कर सूर्य-केतु नाड़ी की प्रक्रिया के माध्यम से स्वर्ण-क्षार बनाती है। दूसरा कारण है कि बछड़े को मार देने के बाद इंजेक्शन लगाकर निकला हुआ दूध हानिकारक होर्मोनिस से युक्त होता है। उस दूध में जो वात्सल्य भाव होना चाहिए वह नहीं होता। तीसरा, गाय

एक जगह बंधी-बंधी कई बिमारियों का शिकार हो जाती है जैसे टी.बी. इत्यादि। उन रोगों के कीटाणु दूध के माध्यम से मनुष्य शरीर में रोग पैदा करते हैं। गाय को हरा चारा नहीं खिलाया जाता। बाजार से खरीदा हुआ चारा खिलाया जाता है जिसमें हानिकारक तत्व होते हैं जो गाय के लिए भी नुकसानदासक है और उसका दूध पीने वाले मनुष्य के लिए भी। पाप-दूध पीने से मनुष्य में कई प्रकार के रोग होते हैं। शरीर के साथ-साथ मन पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है।

इसके विपरीत पुण्य-दूध सभी दृष्टि से लाभकारी है। साक्षात् अमृत है। शास्त्रों में दूध की जितनी महिमा बताई गई है वह सिर्फ पुण्य-दूध पर ही लागू होती है। पाप-दूध पर कभी नहीं।

प्रकृति का बड़ा सीधा सा विधान है। प्रकृति के साथ जैसा व्यवहार करेंगे, वह हमें वैसा ही फल देगी।

●●●

पाप-दूध उद्योग और गोमांस उद्योग एक दूसरे के परिपूरक है

एक और उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं —

पहली बात, जितने भी पशुओं का मांस खाया जाता है, पहले उनका प्रजनन करवाया जाता है, द्रुत गति से प्रजनन करवाया जाता है, जिससे उनकी संख्या बढ़े। उसके बाद उनकी हत्या कर मांस उपलब्ध कराया जाता है। यदि प्रजनन न हो तो मांस के लिए पशु मिलेंगे ही नहीं। मुर्गी पालन, मछली पालन, बकरी पालन, सूअर पालन आदि इसके उदाहरण हैं।

दूसरी बात, जिन जानवरों का दूध नहीं बिकता उन जानवरों का पालन का पूरा खर्च उनके मांस से निकलता है और जिन जानवरों का दूध बिकता है उनका पालन का कुछ खर्च दूध से निकल जाता है और इसके कारण उनका मांस अन्य जानवरों के मांस से सस्ता होता है। उदाहरण के लिए यदि मांस बेचने वाले सभी गाय का पालन सिर्फ मांस के लिए करे और उसका दूध न बिके तो गोमांस आज जिस दाम में बिक रहा है उससे कई गुणा

महंगा हो जायेगा। गोमांस महंगा होने पर उसकी मांग घटेगी। केवल मांस के लिए गोपालन करना गोमांस के व्यापारियों के लिए घाटे का सौदा है इसलिए दूध बेचकर ही उस नुकसान की भरपाई होती है। यदि पाप-दूध बिकना बंद हो जाये तो गोमांस का उद्योग भी बंद होने या घटने को बाध्य होगा। दूसरे शब्दों में कहे तो पाप-दूध खरीदकर हम गोहत्या के उद्योग में भागीदार बन रहे हैं और गोहत्या का कारण बन रहे हैं। प्रतिदिन हजारों बछड़े/बछड़ी कसाई खाने इसलिये जाते हैं, क्योंकि हमको दूध चाहिए। दूध के लिए गाय को प्रजनन करवाना यानि कसाई खाने को गोवंश उपलब्ध करवाना है।

सम्पूर्ण विश्व में दूध के धंधे को मांस के धंधे के साथ जोड़कर देखा जाता है। जिन जिन देशों में बड़े एवं व्यावसायिक स्तर पर दूध का उत्पादन होता उन उन देशों में वहाँ मांस के लिए बड़े-बड़े आधुनिक कत्लखाने भी होते हैं। भारत में भी आज यही स्थिति है।

इससे भिन्न प्राचीन काल से भरत में गोपालन का उद्देश्य कभी भी दूध और गोमांस नहीं था। यह तो पश्चिम की सोच है। भारत में गोपालन का मुख्य उद्देश्य था गोमूत्र-गोबर की उपलब्धता। परन्तु जब से गोमूत्र-गोबर की

उपयोगिता भूलते चले गए और दूध को प्रधानता मिलती गई तभी से गोवंश पर अत्याचार प्रारंभ हुआ। लेकिन यह हमें स्वीकार्य नहीं है। हम इस स्थिति को बदलना चाहते हैं और एक भी गोवंश को वध होने नहीं देना चाहते। यदि ऐसा करना है तो अनावश्यक प्रजनन बंद करवाना होगा और इसके लिए पाप-दूध खरीदना बंद करना होगा अन्यथा जब तक पाप-दूध का व्यापार चलता रहेगा, गो हत्या होती रहेगी।

इसको दूसरे तरीके से समझे तो सिर्फ दूध के लिए अनावश्यक प्रजनन करवाना ही गो-हत्या और गोमांस के उद्योग को बढ़ावा देना है। ऐसे अनावश्यक गो-संतति का अंत कसाई-खाने में ही होता है।

कुछ लोगों का कहना है कि दूध का व्यापार बंद हो जायेगा तो बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो जायेंगे। मेरा उनसे प्रश्न है कि यदि कोई गैर-कानूनी काम करके रोजगार करता है या चोरी करता है या डाका डालता है या गांजा-अफीम बेचता है तो क्या उनको भी बेरोजगारी के नाम पर ये सब करने की अनुमति होनी चाहिए। पाप-दूध का व्यापार करने वाले लोग कोई दूसरा काम ढूंढ लेंगे।

●●●

पुण्य-दूध का उपाय

आपको यदि पुण्य-दूध चाहिए और साथ ही गोवंश की संख्या भी सीमित रखनी है तो उसका सीधा हिसाब है कि दूध देने वाली एक गाय के पीछे २०-२५ गोवंश बिना दूध का पालना होगा। ऐसा करने पर हर वर्ष एक गो-संतति की उत्पत्ति होगी और हर वर्ष एक गोवंश की स्वाभाविक मृत्यु होगी। इससे एक चक्र बन जाएगा जिसमें कुल संख्या २०-२५ ही रहेगी। ऐसे सभी गो-वंश की चरने की व्यवस्था हो और उसके संतानों की भलीभांति देखभाल हो। उसके नवजात संतान को पर्याप्त दूध पिलाया जाए। इस पुण्य-दूध से मानव जाती का और गोवंश का दोनों का कल्याण होगा।

पुण्य-दूध दो ही स्थितियों में मिलना संभव है।

१. गोबर-गोमूत्र के लिए गाय प्रजनन करवाना और उसके कारण दूध प्राप्त होना।

२. दूध के लिए २०-२५ गोवंश का पालन करते हुए मात्र एक गाय से प्रजनन करवाना और दूध लेना, यानी मात्र ५ प्रतिशत गोवंश से दूध लेना।

गोबर-गोमूत्र के लिए गो का पालन करना आसान है लेकिन यदि दूध के लिए ही पालन करना है तो एक दूध वाली गाये के पीछे २० गोवंश बिना दूध का पालना होगा। और वह पुण्य-दूध के सिद्धांतों के अनुसार होना चाहिए।

इसके आगे और भी बात है। हमारे ऋषि-मुनि बहुत विद्वान और दूरदर्शी थे। उन्होंने प्रकृति का गहन अध्ययन किया था और उसी के निष्कर्ष स्वरुप गो को माता कहा और गो की हत्या को अक्षम्य पाप कहा। उन्होंने गोमूत्र और गोबर की उपयोगिता को समझा और गोपालन का मुख्य कारण गोमूत्र-गोबर की प्राप्ति को रखा। हिसाब से देखा जाये तो गोमूत्र-गोबर का सही उपयोग किया जाये तो उसकी उपयोगिता दूध से ज्यादा है और इसलिए तो गोवंश गोमूत्र-गोबर जीवन भर देता है। दूध की आवश्यकता कम है इसलिए प्रकृति ने दूध कभी-कभी देने की व्यवस्था बनाई है।

विद्वानों का कहना है कि प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिए प्रत्येक मनुष्य के पीछे एक गोवंश होना चाहिए (नर हो चाहे मादा)। इससे जितना गोमूत्र-गोबर उपलब्ध होगा उससे मनुष्य की कई आवश्यकतायें पूर्ण होगी और उस संख्या को स्थिर रखते हुए जितने गायों का

प्रजनन करवाना आवश्यक है उससे दूध की आवश्यकता भी पूर्ण होगी। गोवंश की संख्या को स्थिर रखने का सूत्र बड़ा सरल है। यदि ५ प्रतिशत गोवंश द्वारा ही प्रजनन करवाया जाये तो गोवंश की संख्या न ज्यादा बढ़ेगी, न ज्यादा घटेगी।

यदि ये ५ प्रतिशत दुधारु गोवंश औसतन ५ किलो दूध देते हैं तो प्रति व्यक्ति २५० ग्राम दूध मिल जायेगा। यदि औसत १० किलो होता है तो प्रति व्यक्ति ५०० ग्राम दूध मिल जायेगा। यदि औसत २० किलो होता है तो प्रति व्यक्ति १ किलो दूध मिल जायेगा। यह आदर्श स्थिति है। ऐसा एक मॉडल एक गाँव में स्थापित कर प्रमाणित किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में पुण्य-दूध प्राप्त होगा और एक भी गोवंश कभी भी कसाई के हाथों नहीं बिकेगा।

यदि आपमें सामर्थ्य है और भगवान ने आपको ऐश्वर्य दिया है तो आप एक गाय से नियमित दूध लेने के लिए कुल २० गोवंश के पालन की व्यवस्था करें जिसमें हर समय कोई भी एक ही गाय दूध देगी। ऐसी व्यवस्था में कोई दोष नहीं दिखाई देता। यह व्यवस्था पुण्य-दूध के सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए। ●●●

गोरक्षा के कार्यों में भ्रम

गोरक्षा की बात करने वालों को लगता है कि जो गाय ज्यादा दूध देने वाली नस्ल की होगी वो कसाईखानों नहीं जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं है। वो गाय भी एक समय दूध देना बंद कर देगी। जिस दिन वह दूध देना बंद कर देगी उस दिन वो कसाई के पास ही भेज दी जाएगी। उसके जो बछड़े होंगे, जो दूध नहीं देंगे वे भी कसाईखाने जायेंगे। वृहत रुप से दूध उत्पादन करने वाले सभी देश इसका उदाहरण है। वहाँ का गोवंश अधिक दूध देने वाला होता है। फिर भी उसका अंत कत्ल से ही होता है।

इसके अलावा कोई यह बोले कि गोबर-गोमूत्र से आय होगी तो गोवंश सुरक्षित होगा, वह भी एक सीमा तक ही सही है क्योंकि गोबर-गोमूत्र के उपयोग की भी एक सीमा है। उदाहरण के लिए जिसको एक गाय का गोमूत्र और गोबर चाहिए वो दो गोवंश क्यों रखेगा। इसलिए जितना गोवंश चाहिए उतना ही गोवंश रहा तो कभी कत्लखाने नहीं जायेगा। उससे अधिक होते ही उस पर संकट मंडराने लगता है।

कई बार हमें लगता है भैंस और जर्सी का दूध छोड़कर केवल गाय का दूध पीने से गाय बचेगी। लेकिन होता ठीक उल्टा है। हम यह सोचते हैं कि गाय का दूध पीने से गाय की रक्षा होगी, गाय का संवर्धन होगा, लेकिन होता ठीक इसके विपरीत है। गाय का दूध का धंधा होने के कारण ही गाय की हत्या होती है। क्योंकि सभी दूध पाप-दूध है। गाय का दूध पीना है तो वह पुण्य-दूध होना चाहिए जिसका मूल्य १५० से २०० रुपए प्रति लीटर आएगा।

यहाँ तक कि जिन गोशालाओं में दूध के लिए अनावश्यक प्रजनन करवाया जाता है वहाँ से भी गोवंश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कसाई के हाथों पहुँच जाता है।

वास्तविक स्थिति पर ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि इतना अधिक प्रजनन होने के बाद भी गोवंश की कुल संख्या घट रही जिसका मतलब यह होता है कि जितना गोवंश नया पैदा हुआ उससे अधिक गोवंश की हत्या हुई है। इसका अर्थ यह भी हुआ कि जितना गोवंश हमारे पास अभी है उतना भी हम पालने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में हमारे देश में अनावश्यक प्रजनन महापाप की श्रेणी में आता है। यानि जब तक आपको गो-संतति की

आवश्यकता हो तब तक ही प्रजनन कीजिए परन्तु जब गो-संतति की आवश्यकता नहीं, तब प्रजनन रोक दीजिये। यदि नहीं रोकेंगे तो उस अनावश्यक अतिरिक्त गोवंश का अंत दुखदायी होना तय है। किसी को यह लगता है कि इन सभी अतिरिक्त-अनावश्यक-गोवंश को गोशाला में रखकर दान-संग्रह कर गोग्रास देकर बचाया जा सकता है तो यह बड़ी भूल है। कुछ बचेंगे। अधिकांश नहीं बचेंगे।

शास्त्रों में दूध के व्यापार को नीच कर्म बताया है लेकिन गोमूत्र-गोबर के व्यापार का कोई निषेध नहीं है। इसी से पता चलता है कि हमारे देश में गो का महत्व उसके गोबर-गोमूत्र के कारण अधिक और उसके दूध के कारण कम है।

अब तक गोरक्षा के कई उपाय किये गए जैसे :-

- नस्ल सुधार द्वारा अधिक दूध देने वाली गाय तैयार करना,
- गोबर गोमूत्र से आय,
- चमड़ा, वर्क आदि का बहिष्कार,
- गोव्रती बनना,

- अनशन करना,
- गोरक्षा के लिए आन्दोलन करना,
- गोहत्या विरोध का कानून बनाना,
- गोशाला चलाना,
- दान देना,
- धार्मिक भावना जगाना, आदि

फिर भी पूर्ण सफलता नहीं मिली। इसके पीछे का कारण है पाप-दूध का व्यापार का बढ़ना और उसके लिए अनावश्यक प्रजनन का बढ़ना।

●●●

गोवंश की रक्षा क्यों करें

क्या हम गाय की रक्षा सिर्फ इसलिए करना चाहते हैं

- जिससे हम उसकी पूजा कर सकें,
- जिससे गोग्रास दे सकें,
- क्योंकि ऐसा कर पुण्य कमा सकें,
- जिससे अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करवा सकें,
- जिससे दूध मिल सके,
- जिससे गोशालाओं में दान देकर गोसेवा का पुण्य कमा सकें,
- क्योंकि हमको बचपन से सिखाया गया कि गाय हमारी माता है,

यदि ऐसी सोच रही तो गोवंश पैदा होता रहेगा और गोहत्या होती रहेगी क्योंकि जब तक हमारी सांसारिक मनोकामनाएँ पूरी होती रहे, तब तक हमें गोहत्या से कोई तकलीफ नहीं होती। लेकिन यदि हमारी प्राथमिकता गोरक्षा है और उपरोक्त कोई स्वार्थ नहीं है, तो एक भी गोवंश को

थोड़ी सी खरोंच लगने पर बहुत कष्ट होगा।

दो उदाहरणों से समझें -

पहला, गोपाष्टमी उत्सव में पुण्य के लालच में अनजाने में गोभक्त अपने हाथों से गो की हत्या कर देते हैं। सब कोई मिलकर गाय को जरुरत से ज्यादा खाद्य सामग्री खिलाकर उस को बीमार कर देते हैं, जिससे कई बार उसकी मृत्यु हो जाती है।

दूसरा, पितृपक्ष में पितरों को संतुष्ट कर पुण्य कमाने के लिए तली हुई चीजें गाय को खिलातें हैं जिसको खाकर गाय बीमार हो जाती है और कई बार मर भी जाती है।

गो के प्रति हमारा प्रेम कैसा हो इसके लिए भगवान श्रीकृष्ण का पेट दर्द की लीला को समझना होगा। भगवान् कृष्ण ने नारद मुनि से कहा कि मेरे पेट में दर्द है और उसकी दवा है मेरे किसी भक्त के चरणों की एक चुटकी रज। कई भक्तों से भगवान के लिए उनके चरणों की रज मांगी गई लेकिन पाप लगने के भय से किसी भी भक्त ने अपने चरण की रज नहीं दी। जब गोपियाँ से कहा गया तो

वे तुरन्त राजी हो गई क्योंकि उनको भगवान के कष्ट से कष्ट होता है नाकि स्वयं को पाप लगने की चिंता से। इसको कहते हैं सच्चा और निस्वार्थ प्रेम। गोमाता के प्रति भी हमारा प्रेम निस्वार्थ होना चाहिए। पुण्य या दूध रुपी स्वार्थ के लिए नहीं।

यह मत सोचिये कि गोसेवा से मुझे क्या मिला, यह सोचिये कि मैंने गोसेवा के लिए क्या दिया? क्या हमारी गोभक्ति में वो निष्ठा है कि मुझे भले ही पाप लग जाए पर गोमाता को कष्ट नहीं होना चाहिए। मुझे भले ही पुण्य न मिले परन्तु गोमाता को पीड़ा नहीं होनी चाहिए। यदि ऐसा भाव होता है तभी असली गोभक्ति है अन्यथा स्वार्थ भक्ति है।

गाय तो बचनी चाहिए लेकिन मेरे घर में जगह नहीं। गावो रक्षति रक्षित: अर्थात गाय की रक्षा पहले करना होगा, उसके बाद गाय हमारी रक्षा करेगी। यदि गाय की रक्षा नहीं कर पाए तो गाय भी हमारी रक्षा नहीं कर पायेगी। गाय की कृपा हम पर तभी संभव है जब गाय स्वयं सुरक्षित, स्वस्थ, और सुखी होगी। जब तक गाय दुखी है तब तक वह हमें सुखी नहीं बना सकती। हमारी स्थिति ऐसी

है कि शिवाजी तो पैदा होना चाहिए परन्तु पड़ोसी के घर में।

हमें कभी-कभी यह अहंकार हो जाता है कि हम बहुत बड़े गोरक्षक हैं और हम ऐसा करके गायों पर अहसान कर रहे हैं। हमें यह पता होना चाहिए कि हम गाय की रक्षा करते हैं तो गाय पर कोई अहसान नहीं करते बल्कि अपने आप पर अहसान करते हैं क्योंकि यदि गाय नहीं बची तो हम भी नहीं बचेंगे। यदि हम बचना चाहते हैं तो गाय को बचाना ही पड़ेगा, यह हमारी मजबूरी है। क्योंकि

गाय - कृषि का आधार है।
गाय - स्वास्थ्य का आधार है।
गाय - ऊर्जा का आधार है।
गाय - पर्यावरण का आधार है।
गाय - आयुर्वेद का आधार है।
गाय - अर्थव्यवस्था का आधार है।
गाय - ज्ञान का आधार है।
गाय - अध्यात्म का आधार है।
गाय - जीवन का आधार है।

●●●

गोरक्षा के उपाय

गोरक्षा के लिए सबसे पहले गाय की महिमा को समझना पड़ेगा, उसके गोबर-गोमूत्र की महिमा को समझना होगा। उसके बाद गोसंरक्षण और गोसंवर्धन हो। हमारा संकल्प हो कि भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की धरा पर गोमाता का एक भी बूँद रक्त नहीं बहना चाहिए। इसके लिए पाप-दूध छोड़ना कोई कठिन काम नहीं है।

गाय का उचित स्थान किसान का घर है, जहाँ उसके गोबर-गोमूत्र का पूर्ण उपयोग संभव है। गाय को वही व्यक्ति पाल सकेगा जो गोमूत्र और गोबर का उपयोग कर सकेगा। अन्यथा कोई भी व्यक्ति अधिक दिनों तक गोपालन नहीं कर सकता।

गोरक्षा में हमारा पहला लक्ष्य गोहत्या को बंद करना है। गोसंवर्धन उसके बाद होगा। जब तक गोहत्या होती रहेगी संवर्धन हो नहीं सकता। यदि आप अपने घर पर गोपालन नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं, तो उसके दूध की भी मांग नहीं करना चाहिए, क्योंकि आपके दूध की मांग

के कारण से ही गोहत्या हो रही है। चमड़ा का उपयोग करने से जितना गोहत्या का पाप लगता है उससे लाख गुणा अधिक पाप लगता है, पाप-दूध पीने से।

गोवंश सिर्फ दूध के लिए पैदा होता रहे और कटने के लिए जाता रहे, तो इससे बढ़िया है कि वह गोवंश पैदा ही ना हो। सीधी भाषा में कहें तो गोवंश को काटने के लिए ही पैदा करने से बढ़िया है कि उस गोवंश को पैदा ही ना करें। क्योंकि विडम्बना यह है कि गोवंश पैदा करने का काम कसाई नहीं करता, बल्कि गो को माता मानने वाला गोपालक पैदा करता है।

करोड़ो हिन्दू गाय को 'माँ' मानता है और गो की रक्षा चाहता है और इसके लिए गोशाला खोलता है, दान दे कर गोवंश का पालन करता है एवं और भी कई प्रयास करता है। गो-रक्षा के लिए असंख्य प्रयास हुए हैं और हो रहे हैं। लाखों की संख्या में लोग गो-रक्षा के लिए सड़क पर उतर कर आन्दोलन करते हैं, कानून भी बने हैं, परन्तु फिर भी गो-हत्या में कोई कमी नहीं आई, इसका कारण क्या है?

कसाई कभी भी गाय स्वयं पालकर हत्या नहीं

करता। कसाई को गोवंश तब मिलता है जब कोई उसको गोवंश बेचता है। यदि गोवंश को कोई बेचेगा नहीं तो कसाई को हत्या के लिए गोवंश मिलेगा नहीं। दु:ख की बात है कि कसाइयों को गोवंश बेचने वाले लोग सारे गोभक्त हैं।

कोई भी गोभक्त या गो-प्रेमी गोहत्या नहीं चाहता परन्तु दूध सभी चाहते हैं। दु:ख की बात है कि वर्तमान व्यवस्था में इस दूध को पाने के लिए गो को बहुत कष्ट दिया जाता है और अंत में गोवंश को दर्दनाक हत्या का सामना करना पड़ता है। क्या गो-भक्तों को, गो के हित के लिए पाप-दूध का त्याग नहीं करना चाहिये?

आज गोरक्षा करते हुए ध्यान में आता है कि बैलों की रक्षा का कोई उपाय नहीं क्योंकि बैल तो कभी दूध देता नहीं और ट्रेक्टर के आने से खेत में भी उसकी उपयोगिता कम हो गई है। इसलिए सभी बैल कत्लखाने जाते हैं। लेकिन यदि गोवंश का अनावश्यक प्रजनन बंद होगा और अधिकांश गोवंश मुख्यत: उसके गोमूत्र और गोबर के लिए पाला जायेगा तो गाय और बैल दोनों समान रुप से उपयोगी होंगे। गोमूत्र गोबर का बड़ी मात्रा में उपयोग कृषि,

उर्जा, औषधि और घरेलू उद्योग के क्षेत्र में करने की बड़ी संभावनाएं हैं। इस पर अनुसन्धान हो रहे हैं एवं और अधिक होने की आवश्यकता है। शास्त्रों में 'गोमये वसते लक्ष्मी' कहा है। यानि गोबर में लक्ष्मी जी का वास है यानि गोबर द्वारा ही धन और अर्थ की प्राप्ति सम्भव है। दूध के बारे ऐसा नहीं है। राह बहुत सरल है, केवल सोच बदलने की आवश्यकता है। गोवंश दूध के लिये नहीं, गोमूत्र-गोबर के लिये है।

पाप-दूध की मांग समाप्त हो जाएगी तो १०० प्रतिशत गोरक्षा हो जाएगी। उसके बाद यदि कोई गोमांस के लिए गोपालन करता है तो उसके विरुद्ध कड़े नियम बनाने चाहिए और कठोर दंड देना चाहिए।

जिस प्रकार किसी पापी को दंड देने का अधिकार हमको तब है जब हमने कभी वो पाप नहीं किया हो, अन्यथा नहीं। इसलिए गोरक्षा की बात करने का अधिकार उन्हीं को है जो पाप-दूध का त्याग कर चुके हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से गोहत्या में शामिल नहीं हैं।

एक पैसा खर्चा किये बिना, एक मिनट समय

निकाले बिना सम्पूर्ण गोरक्षा करने में आप समर्थ हैं। आपसे निवेदन है सिर्फ पाप-दूध पीना छोड़ दीजिये। यदि हम स्वयं ऐसा करें और तीन लोगों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करें और वो तीन, तीन लोगों को प्रेरित करे तो बहुत ही कम समय में हम अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

शहर वासी जो गाय नहीं पाल सकते, वे पाप-दूध पीना छोड़ दें। बाजार में बिकने वाला दूध, दही, घी या उनसे बने उत्पादों का भी उपयोग तत्काल बंद कर दें क्योंकि वे सभी पाप-दूध से बने हैं। इसी में उनकी और गोमाता की भलाई है। गोरक्षा के प्रति हमारी निष्ठा पक्की होनी चाहिए। जो बात समझ में आ जाये उसे उसी क्षण से अपने जीवन में पालन करना चाहिए।

आज सबको दूध वाली ही गाय चाहिए। बिना दूध वाली गाय जितनी भी सस्ती हो कोई नहीं लेता और बैल को तो कोई पूछता भी नहीं। फिर चाहे वह कोई भी संप्रदाय का व्यक्ति हो। यदि आपकी प्राथमिकता दूध है (चाहे पाप-दूध ही क्यों न हो) तो गोरक्षा की बात भूल जाईये और यदि

आपकी प्राथमिकता गोरक्षा है तो पाप-दूध त्याग दीजिये। पुण्य-दूध के लिए प्रयास कीजिये। जब तक पुण्य-दूध नहीं मिलता है तब तक दूध पीना छोड़ दीजिये। पाप-दूध के बदले नारियल का दूध, बादाम का दूध आदि का सेवन कीजिये। इस प्रकार के दूध आपके स्वास्थ्य के लिए ज्यादा उपकारी हैं। गाय का दूध पीने से यदि गाय कटने जाती हो तो वो दूध पीना चाहिए या नहीं, यह निर्णय हमें आज ही लेना होगा।

संपूर्ण गोरक्षा के लिए तत्काल दो काम करना होगा -

पहला, पाप-दूध के लिए होने वाला अनावश्यक प्रजनन बंद हो।

और दूसरा, देश में पूर्ण गो-रक्षा का विधान हो जिसमें गो-हत्यारे को मृत्युदंड हो।

ऐसा होने पर गोमांस का धंधा सम्पूर्ण बंद हो जायेगा। फिर भी किसी को गोमांस खाना हो तो स्वाभाविक रुप से मरी हुई गाय का मांस खा सकता है। उस मरी हुई गाय का चमड़ा उपयोग में लेना चाहे तो ले सकता है।

उसकी हड्डियों का कोई उपयोग करना चाहे तो करे। इसमें दोष नहीं क्योंकि इसमें हिंसा नहीं। उदाहरण के लिए मनुष्यों के एक समुदाय में यह प्रचलन है कि उस समुदाय के किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसे जलाते या दफनाते नहीं बल्कि चील, गीद्ध आदि जानवरों के आहार हेतु एक खुले स्थान पर छोड़ आते हैं। कई लोग मरणोंपरांत अपने अंगो का दान करने का भी संकल्प लेते हैं। इसे पुण्य कर्म कहा गया है। उसी प्रकार गोवंश के स्वाभाविक मृत्यु के पश्चात् यदि उसके शरीर का कोई हिस्सा किसी के उपयोग में आता हो तो उसके उपयोग में दोष नहीं।

यदि कम समय में और कम शक्ति व्यय कर पूर्ण गोरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना है तो यह सरलतम, सर्वोत्तम एवं एकमात्र मार्ग है। करना सिर्फ इतना है कि पाप-दूध और पुण्य-दूध को पहचाने और गोरक्षा हेतु पाप-दूध के त्याग का व्रत लें। इस मार्ग में सबसे अच्छी बात यह है कि हर संप्रदाय का मनुष्य, जो जीवदया एवं अहिंसा में विश्वास रखता है या अपने स्वास्थ्य की चिंता करता है, इस उपाय को मान सकता है। जो सभी पशुओं से प्रेम करते हैं, परन्तु गो को माता के रुप में नहीं मानते, वे भी सहज ही

इस मार्ग को स्वीकार कर सकते हैं।

हर उस मनुष्य को, जिसके हृदय में दूसरों के प्रति दया, करुणा, प्रेम, सद्भावना, आदर, सम्मान हो, यह संकल्प लेना होगा कि आज से मैं सिर्फ पुण्य-दूध ही पीऊँगा और पाप-दूध को हाथ भी नहीं लगाऊँगा और ना किसी को पीने दूंगा।

जिस प्रकार गोहत्या बंदी के लिए बड़े कानून बनाये जा सकते हैं उसी प्रकार अनावश्यक प्रजनन के विरुद्ध कड़े कानून बनाना चाहिए। लेकिन सब काम सिर्फ कानून से नहीं होते, जन-जागरण की भी आवश्यकता है। यदि पाप दूध लेनेवाले ही नहीं रहेंगे तो अनावश्यक प्रजनन बंद हो जायेगा।

गोहत्या पर इससे बड़ी चोट नहीं हो सकती और गोरक्षा का इससे सरल और सम्पूर्ण कोई भी उपाय नहीं हो सकता। गोरक्षकों का एक ही मुद्दा होना चाहिए कि अनावश्यक प्रजनन बंद हो और इसके लिए पाप-दूध का सेवन बंद हो।

●●●

जन जागरण

जो लोग गोमाता में साक्षात् ईश्वर के दर्शन करते हैं वे लोग सपने में भी उसकी हत्या में भागीदार नहीं बनना चाहेंगे। बल्कि हर हाल में उसकी रक्षा करना चाहेंगे। यहाँ तक की गोरक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी भी लगा देंगे। ऐसे लोगों से मेरा निवेदन है कि आज से पाप-दूध पीना बंद कर दीजिये। पाप-दूध पीकर गोहत्या में भागीदार न बने।

गोहत्या तब नहीं होती जब कसाई उसे काटता है बल्कि उसकी हत्या तो उस वक्त ही हो जाती है जिस वक्त उसे अनुपयोगी समझकर उसे घर से निकाल दिया जाता है या बेच दिया जाता है। वो गोवंश चाहे कसाई के पास जाये, चाहे गोशाला जाये, उस गाय को निकालने वाले व्यक्ति के हृदय में तो उसकी हत्या हो गई। जिस दिन बिना दूध के गोवंश को बोझ समझ लिया उसी दिन उसकी हत्या हो गई। जैसे किसी अपराधी को मृत्युदंड पहले मिलता है और मृत्यु कई दिनों बाद में होती है, उसी प्रकार गाय को घर से निकालना मृत्युदंड देना है।

यदि हम समझते हैं कि गोहत्या रोकने का हमारे में

सामर्थ्य नहीं, हमारे पास इतना धन-बल और जन-बल नहीं, तो कोई बात नहीं। हमारे में इतना सामर्थ्य तो है कि अनजाने में हमारे कारण से जो गोहत्या हो रही है उससे बचें। दूसरों के हाथों हो रही गोहत्या को बंद नहीं कर पाने में हम असमर्थ हैं लेकिन हमारे हाथों से जो गोहत्या हो रही है उसको बंद करने में कैसी असमर्थता?

गोरक्षा के लिए प्राण त्याग देने की बात करने वाले भी पाप-दूध छोड़ने की बात सुनकर ही मुँह फेर लेते हैं। यदि आप भारत से गोहत्या का कलंक मिटाना चाहते हैं तो बाजार का दूध पीना बंद कर दीजिये। क्योंकि इस दूध के सेवन से आपको ही हानियाँ है। पहला तो यह दूध आपके स्वास्थ्य के लिए घातक है। दूसरा इसके सेवन से आपको गोहत्या का पाप लगता है।

जागो गोभक्तों जागो। इससे पहले कि हमारा पाप का घड़ा भर जाये, अपने हाथों ये जघन्य पाप करना बंद करो। पाप-दूध का सेवन सर्वथा त्याग दो। अविलम्ब बंद करो। देर मत करो। जितनी देर करेंगे उतने दिन गोहत्या होती रहेगी।

अज्ञानता वश किसी को लगे कि बिना दूध का

गोवंश बोझ है और उसके लिए गोबर गोमूत्र का कोई उपयोग नहीं तो उसे गो से सम्बन्ध छोड़ देना चाहिए। उसे गोपालन का कोई अधिकार नहीं। अन्यथा उसके कारण से गोहत्या होगी। थोड़ा सोचिये कि सिर्फ दूध के लिए गोवंश को दर्दनाक मौत देना कहाँ की मानवता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो गाय का स्वयं का दूध ही उसके दुखों का कारण बन गया है, उसकी जान ले रहा है, उसके प्राण हर रहा है।

हम सब एकजुट होकर पाप-दूध को बंद करने की दिशा में काम करेंगे तो बहुत ही कम समय में हम १०० प्रतिशत गोरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। ९५ प्रतिशत गोवंश का पालन सिर्फ गोबर गोमूत्र के लिए हो और ५ प्रतिशत गोवंश से ही प्रजनन करवाया जाये।

पाप-दूध पीने का अर्थ है गोमाता का खून पीना। पाप-दूध दूध नहीं सफेद जहर है। बकरीद पर गोरक्षा की हुंकार भरने वाले गोभक्तों का कर्त्तव्य है कि वे सभी मिल कर पाप-दूध को समूल नष्ट कर पूर्ण गोरक्षा का मार्ग प्रशस्त करें।

बकरीद पर होने वाली लाखों गोहत्या से हमारे

हृदय में जितनी पीड़ा होती है उतनी ही पीड़ा पाप-दूध को देख कर होनी चाहिए। उसको पीना तो बहुत दूर की बात है।

यदि सरकार गोरक्षा कानून नहीं बना रही तो सरकार हमको पाप-दूध पीने के लिए बाध्य भी तो नहीं कर रही। यदि सभी गोभक्त पाप-दूध पीना बंद कर दे तो गोहत्या पर पूर्ण विराम लग जायेगा। कोई भी सरकार हमें पाप-दूध छोड़ने से रोक नहीं सकती या पाप-दूध पीने के लिए बाध्य नहीं कर सकती।

गोरक्षा के लिए धन संग्रह करना हो तो करोड़ों रुपए संग्रह हो जायेंगे। गोरक्षा के लिए सड़क पर उतर कर आन्दोलन करना हो तो लाखों लोग आ जायेंगे। गोरक्षा के लिए कथा, भजन, कीर्तन, सत्संग का आयोजन हो तो हजारों लोग आ जायेंगे। गोहत्यारों का विरोध करने के लिए करोड़ों आवाज उठ खड़े होंगे परन्तु जब पाप-दूध छोड़ने की बात आती है तो एक भी साथ नहीं दिखाई देता।

वर्क का विरोध करना उचित है परन्तु वर्क के कारण जितनी गोहत्या होती उससे हजार गुणा अधिक उस मिठाई को बनाने में उपयोग किया गया पाप-दूध के कारण होती है।

पाप-दूध छोड़ देंगे तो वर्क बनाने के लिए उनको गाय की आंत ही नहीं मिलेगी। मिठाई में प्रयोग होने वाले वर्क का बहिष्कार जितना आवश्यक है उससे एक हजार गुणा अधिक आवश्यक है उस मिठाई में उपयोग होने वाले पाप-दूध का बहिष्कार। जिस प्रकार वर्क के उपयोग होने के कारण मिठाई खाने योग्य नहीं रहती, उसी प्रकार पाप-दूध के उपयोग होने के कारण भी वह मिठाई खाने योग्य नहीं रहती।

जिस प्रकार शाकाहारी मनुष्य किसी भी परिस्थिति में मांसाहार नहीं करेगा, उसी प्रकार सच्चा गो-भक्त किसी भी परिस्थिति में पाप-दूध और उससे बनी वस्तुओं का सेवन नहीं करेगा।

जब भी किसी के पास गाय देखें तो उससे यह मत पूछिए कि वह कितना दूध देती है। उससे यह पूछिए कि आप गोबर-गोमूत्र का क्या करते हैं। जिस दिन हमारा सोचने का तरीका बदलेगा उस दिन गोवंश को कष्टों से मुक्ति मिलेगी।

●●●

कहते हैं माँ है ये

रस्सी में जकड़ के रखा,
पूरी जिन्दगी पकड़ के रखा,
मीलों तक जो चलते थे
उनको रखा बाड़े में,
और कहते हैं माँ है ये।

हर वर्ष जबरन गर्भवती बनाते,
जीवन भर ये क्रिया कराते,
दूध की फैक्ट्री बना दिया है,
देखो कैसा सिला दिया है,
और कहते हैं माँ है ये।

पैदा हुआ नवजात बछड़े का
दूध लेते हैं छीन,
और उसको देते सूखा भूसा,
गाय रोती हो गमगीन,
और कहते हैं माँ है ये।

बछड़े को माँ से अलग कराते,
जुल्म करते कहर है ढ़ाते,

दासता का जीवन देकर
खुद को गोप्रेमी कहलवाते,
और कहते हैं माँ है ये।

बड़े हुए बछड़े को बेंचते
जो जाते सीधे कसाई खाने में,
बूढ़ी हुई गाय भी बिकती
जो जाती उसी ठिकाने में,
और कहते हैं माँ है ये।

नवजात शिशु के हिस्से के दूध का
यहाँ पर व्यापार लगा है,
मुस्टंडे और बूढ़े हैं पीते,
वेश्यीपन का बाजार लगा है,
और कहते हैं माँ है ये।

दूसरी माँ के स्तन के दूध को
छीनने का किसने अधिकार दिया,
अपना स्वार्थ सिद्ध करते हो,
देखो यहाँ बलात्कार हुआ,
और कहते हैं माँ है ये।

●●●

हमारी अन्य पुस्तकें :

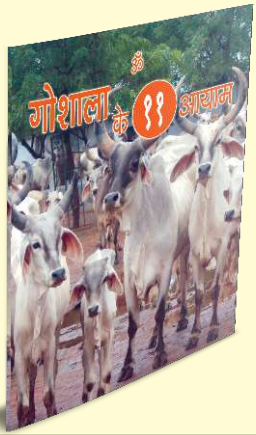

गोशाला के ११ आयाम

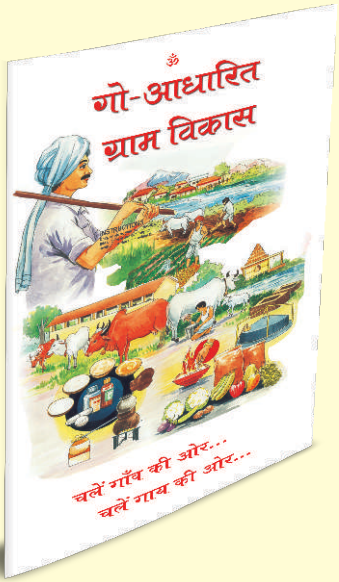

गो-आधारित
ग्राम विकास